प्राक्कथन

जब मैं एम.ए. में पढ रहा था, उसी समय मुझे " निराला " का " अनामिका ", [नवीन] नामक काव्य संग्रह पढने को मिला। इस संग्रह में कुल ५६ कविताअें थी जिन में ७ कविताएँ अनुदित थी। कवि की मौलिक कविताओं के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ, कवि सिर्फ छायावादी नहीं है बल्कि उनमें अनेक प्रवृत्तियों से युक्त कवितायें मिलती है। इस संग्रह में दार्शनिक, प्रकृति चित्रन, प्रेम वर्णन , सामाजिक आशय, प्रार्थना उद्बोधन आदि विषय कविताओं में दृष्टिगत होते है। इसके बाद "परिमल", गीतिका, "आणिमा", बेला", "अपरा" आदि काव्य संग्रह पढने का अवसर मिला। उसी समय मुझे इस महाकवि की बहुमुखी प्रवृत्तियों का एहसास हुआ और उसी समय मैं ने निश्चय कर लिया कि मैं निराला के काव्य पर शोध कार्य करूँगा। मैंने एम.ए. की परीक्षा अच्छे अंको से पास की और साथ ही मुझे एम.फिल. [हिन्दी] में भी प्रवेश मिल गया। विषय तो मेरे मन में था ही इसीलिए मैं ने अपनी शोध निर्देशिका प्रा. डॉ.सौ. शशिप्रभा जैन जी से इस विषय पर चर्चा की और उन्होने भी प्रसन्नता पुर्वक मुझे इसकी अनुमति दे दी। इस प्रकार मुझे निराला के अन्यान्य काव्य ग्रंथो से चुनी हुई कविताओं के "अपरा" काव्य संकलन में विद्यमान अनेक प्रवृत्तियों के शोध कार्य का मौका मिला। प्रस्तुत काव्य संकलन में ग्यारह प्रवृत्तियाँ दिखाने का प्रयास किया है।

निराला के इस काव्य संकलन में कुल ७८ कवितायें है जिनमें कुछ कवितायें लंबी है। परंतु मुख्य बात यह है इसमें जो कवितायें हैं वे सन १९१६ से सन १९४६ तक की कविताएँ मौजूद हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए इस संकलन को चुन लिया है क्योंकि यह संग्रह इनके काव्य साधना का प्रतिनिधित्व करता हैं।

मेरे लघु शोध प्रबंध का विषय है " निराला " के अपरा काव्यसंकलन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ "। निराला के काव्य में प्रवृत्तियों का स्थित स्थ तथा उस स्थित स्थसे इनके कविताओं की प्रवृत्ति कितना साम्यत्व रखती है यह ढूंढना लघू शोध प्रबंध का प्रधान लक्ष्य है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टिसे मैंने इस लघू शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में बाँटा है।

मेरे लघु शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में निराला का जीवन का संक्षेप - परिचय दिया है। उनका जन्म, शिक्षा, परिवारिक जीवन तथा जीवन कुछ पहलुओं की चर्चा इस अध्याय में हुई है।

मेरे लघु शोध प्रबंध के द्वितीय अध्याय में कवि निराला की काव्य साधना का संक्षेप में विवेचन किया है।

मेरे लघु शोध प्रबंध की तृतीय अध्याय में "अपरा" काव्यसंकलन की प्रमुख कविताओं का परिचय किया है। जिसमें इस संकलन में जो मुख्य कवितायें हैं उनका विशेष परिचय इस अध्याय में स्पष्ट हुआ है।

अध्याय क्रमांक चार में अपरा काव्यसंकलन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ जिनमे -- १] छायावाद, २] रहस्यवाद, ३] प्रगतिवाद, ४] प्रकृतिवर्णन, ५] अपरा की नारी, ६] गीततत्व, ७] "अपरा" काव्यसंकलन में राष्ट्रीय विचारधारा, ८] संघर्षपूर्ण जीवन का प्रतिबिंब, ९] "अपरा" काव्यसंकलन में यथार्थवादी स्वर, १०] सौंदर्य और प्रेम, ११] "अपरा" काव्यसंकलन में व्यंग्य आदि। उपर्युक्त प्रवृत्तियों का स्थित एवं संभाव्य स्थ दिखाकर "अपरा" काव्यसंकलन में इसका अस्तित्व दिखाने का शोध कार्य इस अध्याय में किया है।

पंचम अध्याय उपसंहार का रहा है, जो मेरे संपूर्ण लघु शोध प्रबंध का निचोड है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में मुझे क्या नया ज्ञान मिला, इसका उल्लेख किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध को मैं पूर्ण नहीं कह सकता, यह तो शोध पथ पर चलने का मेरा पहला कदम है। मैं चाहता हूँ, अपने प्रिय लेखक निरालाजी के सभी कृतियों को पढकर उन्हे आत्मसात करके उनपर व्यापक शोध कार्य करूँ।

अंत में सहाय्यक ग्रंथों की सूची जोड दी हैं, जो शोध प्रबंध की निर्मिती में विशेष सहायक रही है।

-: ऋण निर्देश :-

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को मैं पूरा कर पाया इसका श्रेय मेरे आदरणीय गुरुवर्य मार्गदर्शिका प्रा.डॉ.सौ. शशिप्रभा जैनजी को हैं। उनके मार्गदर्शन के लिए मैं अत्यन्त ऋणी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के भूतपुर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.व्ही.के.मोरेजी तथा भोगावती महाविद्यालय के प्राचार्य प्रा.एस.टी.जाधवजी ने मुझे काफी सहायता की उसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय के डॉ.अर्जुन चव्हाण तथा भोगावती महाविद्यालय के प्रा.मोरे, प्रा.गुरुवर्य वेदपाठक और लाड, प्रा.परिट, प्रा.वायंगनकर, प्रा.पाटील, आदीने मुझे समय समय पर मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहित किया, इसलिए उनका आभार मानना मेरा कर्तव्य हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पुरा करने में मेरे माता, पत्नी तथा भाई बहन साथ ही मेरे मित्र - किसन डेळेकर, संभाजी, एकनाथ तथा रघुनाथ पाटील, आनंदा कोईंगडे, देसाई, महापुरे, भोसले आदि को जितना सन्तोष और हर्ष मिला हैं, उसको में शब्दो में व्यक्त नहीं कर सकता, यह उनके आशीर्वाद का ही प्रसाद हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पूरा करने के लिए मुझे सामग्री उपलब्ध करा देने में शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल तथा भोगावती महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री कुलकर्णीजी का सहकार्य अपेक्षित रुप से मिला, इसलिए उनको भूलना मेरेलिए कठिन होगा। शोध प्रबन्ध का टंकन कार्य श्री.राजेंद्र चव्हाणजी ने यथा समय पुरा किया हैं, उनका भी मैं आभारी हूँ। भविष्य में भी इन लोंगो से आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना रखते हुऐ मैं अपना यह लघु शोध प्रबन्ध अवलोकन के लिए समीक्षकों के सामने रखता हूँ।

कोल्हापुर.

दि. 29 दिसंबर, १९९५

आपका कृपार्थ

[श्री.राजेंद्र लहू पाटील]